प्रातःक्लास 26-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बेहद का बाप बैठकर बच्चों को समझाते हैं। हर एक बात एक हद की होती है दूसरी बेहद की होती है। इतना समय तुम हद में थे। अभी बेहद में हो। पढ़ाई भी बेहद की है। बेहद की बादशाही का पढ़ाई। इस से बड़ी पढ़ाई कोई होती नहीं। कौन पढ़ाते हैं बेहद का बाप भगवान। शरीर निर्वाह अर्थ भी सभी कुछ करना है। फिर भी अपनी उन्नति के लिए करना होता है। बहुत नौकरी में होते भी उन्नति के लिए पढ़ते हैं। वह है हद की बातें। यहां बेहद के पास बेहद की उन्नति होती है। बाप कहते हैं हद की और बेहद की दोनों करो। बुधि से समझते हैं बेहद की सच्ची कमाई अभी करनी है। यहां तो यह सभी मिट्टी में मिल जाना है। जितना2 तुम बेहद की कमाई भंडार भरते जावेंगे हद की कमाई के बातों का विनाश होता जावेगा। सभी समझ जावेंगे अभी तो विनाश होना है। विनाश नजदीक होगा तो भगवान को ढूंढेंगे। विनाश होता है तो जरूर स्थापना करने वाला भी होगा। दुनिया तो कुछ भी नहीं जानती। तुम प्रजापिता ब्रह्मा कुमार कुमारियां भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पढ़ाई पढ़ रहे हो। हास्पीटल में स्टुडन्ट वह रहते हैं तो पढ़ते हैं। परन्तु यह हास्पीटल तो न्यारी है। इस हास्पीटल में तो रैस भी रहते हैं। शुरू में चले आये थे तो वह रह गये हैं। ऐसे ही आ गये। वैराईटी आ गये। ऐसे नहीं कि सभी छोटे2 बच्चे भी ले आये। तुम बच्चों को सम्भालते थे। फिर उन से भी तो कितने चले गये। बुलबुल के साथ चीड़ी भी फंसाते हैं ना। सभी चाहिए ना। चीड़ी बुलबुल मैना, डेडर आदि सभी चाहिए। बगीचे में पक्षी भी देखो फूल भी देखो। कैसे2 टिकलु2 करते हैं। यह मनुष्य सृष्टि भी इस समय ऐसी है। जब बाप समझाते हैं तो तुम जान जाते हो। हम तो बिल्कुल जंगली बड़े2 एप्स थे। जंगल के जनावर मिशल थे। कोई सभ्यता नहीं थी। सभ्यता आर वालों की महिमा पूजा आदि करते थे। और अपने को पापी नीच कहते थे। हम निर्गुण हारे में कोई गुण नहीं। भल कितने भी बड़े2 आदमी होते हैं, वह भी फील तो करते होंगे। मनुष्य भगवानस्यपिता को न जाने तो वह मनुष्य क्या काम का। तुम कुछ भी काम के न थे। अभी तुम समझते हो बाप की तो कमाल है। बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। जो राजाई हम से कोई भी छीन न सके। जरा भी कोई विघ्न डाल न सके। क्या से क्या बनते हैं। तो ऐसे बाप के डायरेक्शन पर श्रीमत पर चलना चाहिए ना। भल दुनिया में कितने भी हंगामे ग्लानी आदि होती है। वह तो कोई नई बात नहीं। 5000 वर्ष पहले भी हुआ था। शास्त्रों में भी है बच्चों को बताया है यह शास्त्र जो भक्ति मार्ग में बने हैं वह अभी छोड़ दो। वह तो फिर भी भक्ति मार्ग में पढ़ेंगे। इस समय तुम ज्ञानसे सुखधाम जाते हो। इसके लिए पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए। जितना अभी पुरुषार्थ करेंगे वह कल्प2 होता रहेगा। अपनी अन्दर जांच करो कहां तक हम ऊंच बने हैं। यह तो हर एक स्टुन्ट समझ सकते हैं। जितना अच्छा पढ़ेंगे तो ऊपर जावेंगे। यह तो हम से होशियार है। हम भी होशियार बनें। अल्प काल के सुख के लिए कितनी मेहनत करते हैं। बाप कहते हैं मीठे2 कितना बड़ा बाबा है। साकार बाप भी है निराकार बाप भी है। दोनों इकट्ठे हैं। दोनों मिल कर कहते हैं मीठे2 बच्चों अभी तुम बेहद की पढ़ाई को समझ गये हो। और तो कोई जानते नहीं। पहली बात तो हमको पढ़ाने वाला कौन है। भगवान, क्या पढ़ाते हैं? राजाई। तुम राजऋषि हो ना। वह है ही योगी। भल है ऋषि परन्तु हद के। वह कहते भी हैं हम ने घर-बार छोड़ा है। यह कोई अच्छा काम किया है क्या। तुम घर-बार तब छोड़ते हो जब तुमको विकार के लिए तंग करते हैं। उनको क्या तंगी हुई। तुमको मार पड़ती है तब ही भागते हो। एक एक से पूछो। कुमारियों से स्त्रीयों ने मार खाई है तब चले आये हैं। शुरू में कितने आ गये। यहां मिलता था ज्ञान अमृत। तो चिट्ठी भी ले आये हम ज्ञान अमृत पीने लिए ओमराधे के पास जाते हैं। विश्व के ऊपर झगड़ा शुरू से लेकर चला आता है। यह बन्द तब होगा जब आसुरी दुनिया का विनाश होगा। फिर आधा कल्प के लिए बन्द हो जावेगा। अभी तुम

बापसे बेहद का प्रारब्ध लेते हो। बेहद का बाप सभी को बेहद का प्रारब्ध देते हैं। हद का बाप हद का प्रारब्ध,। वह भी सिर्फ बच्चे को वर्सा मिलता है। यहां तो बाप कहते हैं बच्चो हो या बच्चा। दोनो वर्से के हकदार हैं। उस लौकिक बाप पासभेद रहता है सिर्फ बच्चे को वर्सा देते हैं। स्त्री को हाफ पार्टनर कहते हैं। परन्तु उनको भी हिस्सा देते थोड़े ही हैं। बच्चे ही सभी ले लेते हैं। अभी गवर्मेन्ट पास कौन जावे। बाप का बच्चों में मोह रहता है। यह बाप तो कामदे अनुसार सभी बच्चों(आत्माओं) को वर्सा देते हैं। बच्ची वा बच्चे की कोई भेद ही नहीं। तुम कितना सुख का वर्सा बेहद के बाप से लेते हो। फिर भी पूरा पढ़ते नहीं हैं। पढ़ाई को छोड़ देते हैं। बच्चियां लिखती है बाबा यह नहीं आते हैं। बल्ड से लिख कर भी दिया। बाबा आप प्यार करो चाहे मारो आप को हम कब नहीं छोड़ेंगे। बल्ड से लिख कर परवरिस भी लेकर फिर चले जाते हैं। बाप ने समझाया है यह सभी ड्रामा है। कोई आश्चर्यवत भागन्ती भी होंगे। यहां बैठे निश्चय भी होता है ऐसे बेहद के बाप को हम कैसे छोड़ेंगे। वह तो पढ़ाते भी हैं। गैरन्टी करते हैं हम साथ ले जाऊंगा। पाण्डव सेना का मुख्या है ना। तुम श्रीमत पर चलो तो हम सभी को ले जाऊंगा। सतयुग आद में इतने सब थोड़े ही थे। अभी संगम पर सभी हैं। कितने ढेर मनुष्य हैं। सतयुग में तो बहुत थोड़े होंगे। इतने भी धर्म वाले कोई भी न रहेंगे। इसके लिए सारी तैयार हो रही है। यह शरीर छोड़ कर शान्तिधाम चले जावेंगे। हिसाब किताब चुकुत कर। जहां से आये हैं पार्ट बजाने वहां चले जावेंगे। वह होता है हद का नाटक। यह है बेहद का नाटक। तुम जानते हो हम उस घर के रहवासी हैं। और हैं भी एक बाप के बच्चे। रहने का स्थान है निर्वाण धाम। वाणी से परे। वहां आवाज़ होता नहीं। मनुष्य समझते हैं ब्रह्म में लीन हो जाते हैं। बाप कहते हैं आत्मा तो अविनाशी है। वह कब विनाश हो न सके। कितने जीवात्मायें हैं। आत्मा अविनाशी है। जीव द्वारा पार्ट बजाती है। सभी आत्मायें ड्रामा के एक्टर्स हैं। रहने का स्थान है ब्रह्म ब्रह्मण्ड। वह घर है। आत्मायें अण्डे मिशल दिखाई पड़ती है ना। वहां रहने का स्थान है। हर एक बात को अच्छी रीत समझना है। नहीं समझते हैं तो आगे चल कर आपे ही समझ जावेंगे। अगर सुनते रहेंगे तो। छोड़ेंगे तो फिर कुछ भी समझेंगे नहीं। तुम बच्चे जानते हो इस पुरानी दुनिया दुनिया खत्म हो नई दुनिया स्थापन होती है। बाप कहते हैं कल तुम विश्व के मालिक थे अभी फिर तुम विश्व के मालिक बनने आये हो। गीत भी है ना बाबा हमको ऐसा मालिक बनाते हैं जो कोई भी छीन न सके। आकाश ज़मीन आद सभी पर हमारा अधिकाररहता है। यहां तो टुकड़ा2 कर दिया है। पानी पर भी झगड़ा चलता है। अपनी2 टुकड़ी2 अलग2 कर दी है। अन्दर में कितनी शैतानी रहती है। यह ब्रिटीश गवर्मेन्ट की ठगी है। परन्तु किसकी भी बुद्धि में नहीं आता। उन्हों को आमदनी होती है बहुत। तो उनको युक्ति से छोड़ते नहीं हैं। नहीं तो प्राईम मिनिस्टर किसकी न सुने। क्वीन का भी न सुने ऐसा कब देखा। क्वीन नहीं समझती होगी कि यह ठगी करते हैं। जो मेरी भी नहीं मानते हैं। अन्दर है सारी ठगी। इन जैसे ठगी कोई कर न सके। इस दुनिया में देखो क्या2 है। सभी के है मतलब के साथी। वहां तो ऐसे नहीं होगा। जैसे लौकिक बाप बच्चों को कहते हैं ना यह धन माल सभी कुछ तुमको देकर जाते हैं। उनको अच्छी रीतसम्भालना। बेहद का बाप भी कहते हैं तुमको सभी धन-माल देते हैं। तुम ने हमको बुलाया है पावन दुनिया में ले चलो तो जरूर पावन बना कर विश्व का मालिक बनावेंगे ना। बाप कितना युक्ति से समझाते हैं। इनका नाम ही है सहज ज्ञान सहज योग। सेकण्ड की बात है। सेकण्ड में मुक्ति मिलती है। तुम अभी कितने दूरनदेश बुद्धि हो गये हो। यही चिन्तन होतारहे। हम बेहद के बाप से पढ़ रहे हैं। हम अपने लिए राज्य स्थापन कर रहे हैं। तो उसमें हम ऊंच पद क्यों नहीं पावेंगे। कम क्यों पावें। राजधानी स्थापन होती है उसमें सभी मतवे होंगे ना। दास-दासियां भी ढेर होंगी। वह भी बहुत सुख पाते हैं। साथ में महलों में रहेंगे। बच्चों आद की सम्भाली होगी कितना सुखी होंगी।

सिर्फ नाम है दासी। जो राजा-रानी खाते वही दास-दासियां भी खाती है। प्रजा में तो नहीं मिलता होगा। इतना मान होता है दासियों का। फिर उनमें भी नम्बरवार होते हैं। सारी सलतनत को याद करो। कलियुग में है अनेक। सतयुग में है एक। सारे विश्व के मालिक बनते हो। दास-दासियां तो यहां भी राजाओं पास होती हैं। प्रिन्सेज की सभा जब लगती है तो आपस में प्रिन्सेज मिलते हैं तो फुल श्रृंगार किये हुये ताज आदि सहित होते हैं। फिर उन में भी नम्बरवार। बड़ी शोभनिक सभा लगती है। उस में रानियां नहीं बैठती हैं। वह पर्दे में रहती हैं। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। उनको तुम पतितपावन कहते हो। जीवदान देने वाला। घड़ी2 शरीर छोड़ने से बचाने वाला। वहां मरने की चिन्ता नहीं रहती। यहां तो कितनी चिन्ता रहती है। थोड़ा कुछ हुआ बुलावेंगे डाक्टर को कि कहां मर न पड़े। वहां डर की बात ही नहीं। तुम काल पर जीत पाते हो तो कितना नशा होना चाहिए। पढ़ाने वाले को याद करो तो तो भी याद की यात्रा हुई। बाप टीचर सदगुरु को याद करो तो भी ठीक है। तितना श्रीमत पर चलेंगे। गायन भी है मनसा वाचा कर्मणा पावन बनना है। दुधि में विकारी संकल्प भी न आये। वह तब होगा जब भाई2 समझो। बहिन भाई समझने से भी छी छी हो जाते हैं। तभी बाप ने कहा है भाई2 समझो। मैं सभी आत्माओं का बाप हूं। आत्माओं को पढ़ाता हूं। आत्माओं का बाप कहते हैं दादा भी मेरे साथ है। बाबा दृष्टि देंगे तो तो दादा भी साथ में होगा। यह कितना अच्छा है। कितनी अच्छी सर्विस करते हैं। आंखें धोखा देती हैं इसलिए बाप कहते हैं तीसरा नेत्र दिया है। अपने को आत्मा समझ भाई2 देखो। इसको कहा जाता है ज्ञान का तीसरा नेत्र। बहन भाई में फेल होते हैं। तो दूसरी युक्ति निकाली जाती है। अपने को भाई2 समझो। बड़ी मेहनत है। सबजेक्टस होती हैं ना। यह भी पढ़ाई है। तो इसमें यह उंच सबजेक्ट है। जिस से नामरूप में नहीं फंस सकते। बहुत बड़ा इम्तहान है विश्व के मालिक बनने का। मुख्य बात बाप कहते हैं भाई2 समझो। यह बाप टीचर सदगुरु तीनों ही हैं। अज्ञान काल में बाप टीचर गुरु क्या सिखलाते हैं वह तो मालूम है। बाप विकार में ले जाते हैं। टीचर पढ़ाते हैं। गुरु हद का ज्ञान देते हैं। यह बाप तो बेहद का सुख देते हैं तो इतना पुरुषार्थ करना चाहिए ना। चलते2 कितने ट्रेटर भी बन पड़ते हैं। उस लड़ाई के मैदान में भी ऐसे होता है। एक दो से मिलकर फिर दुश्मन बन पड़ते हैं। यहां भी ऐसा होता है। अच्छे2 बच्चों को भी माया अपना बनालेती है। तब बाबा कहते हैं मुझे फारकती भी देते हैं। डायवोर्स भी देते हैं। फारकती बच्चे दर के होते हैं, डायवोर्स स्त्री पुरुष का होता है। बाप कहते हैं हमको दोनों ही मिलती हैं। अच्छी2 बच्चियां भी डायवोर्स दे जाये रावण की बनी। बन्दर फुल केस हुआ। माया क्या न कर सकती है। बाप कहते हैं माया बहुत कड़ी है। गायन है ना गज को ग्राह ने खाया। बहुत गफ्लत कर बैठे हैं। बाप से भी बेअदबी करते हैं। तो माया एकदम कच्चा खालेती है। जैसे सर्प मेढक को हप करती है। माया ऐसी है। कोई को एकदम पकड़ लेती है। अच्छा बच्चों को कितना सुना कर कितना सुनाऊं। मुख्य बात है अलफ। मुसलमान लोग लोग भी कहते हैं उठ कर अलफ को याद करो। यह वेला सोने का नहीं है। इस उपाय से ही विकर्म विनाश होते हैं। और कोई उपाय नहीं। बाप तो बच्चों के साथ कितना वफादार है। कब छोड़ेंगे नहीं। आये ही हैं सुधार कर साथ ले जाने। याद की यात्रा से ही तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। उस तरफ जमा हो जावेंगा। बाप कहते हैं अपनी चौपड़ी खो। हम क्या याद करते हैं। सर्विस करते हैं। व्यापारी लोग घाटा देखते हैं तो खबरदार रहते हैं। घाटा न डालना चाहिए। कल्प कल्पांतर का घाटा पड़ता जावेगा। अच्छा बच्चों को गुड़ मार्निंग नमस्ते।

डायरेक्शन:-
******** सर्विस स्कुल बच्चियां चाहती है एक फाजुल्का, नाभा अलवर खुरजा, और बनारस, फरुखाबाद (म्युजियम) इन्हों सेन्टर्स लिए कोई सर्विस स्कुल टीचरनी की जरूरत है। कोई तैयार हो तो बाबा को पत्र लिखो फौरन। अच्छा।

%:-ओमशान्ति:-%